B.A. (Part - 1)

30/07/020

CREDIT - CONTROL

साख का नियमन एवं नियंत्रण केन्द्रीय बैंक का एक प्रधान कार्य है। साधारणतः यह कहा जाता है कि केन्द्रीय बैंक का यह कार्य इतना अधिक महत्वपूर्ण है कि इसके अन्य सभी कार्यों का सूत्रपात इसी कार्य से हुआ है। हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक देश की मौद्रिक व्यवस्था में बैंक मुद्रा, यानि साख का महत्व आज-कल बहुत बढ़ गया है। बैंक मुद्रा या साख-सृजन का कार्य व्यावसायिक बैंक करते हैं। इसके राशि में परिवर्तन का देश के आर्थिक स्थिति पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है, अतः मौद्रिक नीति के सफल संचालन के लिए इस पर केन्द्रीय बैंक का समुचित नियंत्रण अनिवार्य हो जाता है। केन्द्रीय बैंक द्वारा साख-नियंत्रण का अर्थ साख की पूर्ति को देश की औद्योगिक एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुसार संतुलित रूप से समायोजित करना है, क्योंकि व्यापारिक आवश्यकताओं के अनुसार साख की पूर्ति नहीं रहने से मूल्य-तल अत्यधिक प्रभावित होता है।

Need for Control of Credit :-

वर्षों पूर्व से ही आधुनिक आर्थिक व्यवस्था में साख के सृजन एवं वितरण के नियंत्रण की आवश्यकता पर जोर दिया जा रहा है।

Scanned with CamScanner

इसका प्रधान कारण यह है कि आधुनिक समय में देश के अधिकांश मौद्रिक एवं व्यावसायिक भुगतानों में साख का बहुत बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाता है। अतः इसका देश की आर्थिक स्थिति पर अच्छा तथा बुरा दोनों ही प्रकार का प्रभाव पड़ता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आधुनिक आर्थिक व्यवस्था मुद्रा पर नहीं आधारित होकर मुख्य रूप से साख पर आधारित है। साख की मात्रा में परिवर्तन के फलस्वरूप मुद्रा की क्रय-शक्ति एवं व्यावसायिक क्रियाशीलता में परिवर्तन होता है और चूँकि मुद्रा की क्रय-शक्ति एवं व्यावसायिक क्रियाशीलता में परिवर्तन का आर्थिक जीवन के विभिन्न अंगों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अतः साख का नियंत्रण देश के आर्थिक कल्याण के लिए आवश्यक समझा जाता है।

आधुनिक समय में चलन की मात्रा का नियमन (Regulation of Currency) भी बहुत हद तक साख के नियंत्रण से ही सम्बन्धित है। अधिकांश केन्द्रीय बैंकों के विधान में तो इस प्रकार की व्यवस्था पायी जाती है। उदाहरणार्थ, Bank of Canada के विधान में बैंक का प्रमुख कार्य साख एवं चलन का नियंत्रण तथा Reserve Bank

of India के विधान में प्रचलन एवं साख प्रणाली का देश के आर्थिक हितों के अनुसार नियमन की व्यवस्था की गयी है।

Objectives of credit control :-

साख नियंत्रण के साधारणतया निम्नलिखित तीन उद्देश्य बतलाये जाते हैं:

(1) **विनिमय दर को स्थायी बनाना** :- साख नियंत्रण की नीति का प्रधान उद्देश्य विनिमय-दर को स्थायी बनाना भी हो सकता है, क्योंकि विनिमय-दर की स्थायित्व का देश के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, प्रथम महायुद्ध के पूर्व के अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण-प्रमाप का प्रधान उद्देश्य विनिमय दर को स्थायी बनाना ही था। अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण-मान में विभिन्न देशों की मुद्राएँ सोने की बनी या स्वर्ण पर आधारित होती थी, अतः उनकी विनिमय दरों में सामान्यतः स्थायित्व रहता था। स्वर्ण-मान के अन्तर्गत जब स्वर्ण बाहर जाने लगता था तो देश में मुद्रा-संकुचन तथा जब स्वर्ण बाहर से आने लगता था तो मुद्रा प्रसार करना पड़ता था। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण-मान स्वतः प्रचलित मान होता था। इसे कार्यान्वित करने में केन्द्रीय बैंक प्रायः निष्क्रिय ही रहता था। इससे स्पष्ट है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण-मान के अन्तर्गत विनिमय दर के स्थायित्व पर ही अधिक ध्यान दिया जाता था।

Scanned with CamScanner

(2.) मूल्य तल को स्थायी बनाना :—

आधुनिक समय में, विशेषतः अंतर्राष्ट्रीय स्वर्ण-मान के पतन के बाद से, साख-नियंत्रण की नीति का प्रधान उद्देश्य आंतरिक मूल्य-तल को स्थायी बनाना समझा जाता है। मूल्य-तल को स्थायी बनाना कई कारणों से लाभदायक है। इससे देश की राष्ट्रीय व्यवस्था में लोगों का विश्वास बढ़ता है, उत्पादन बढ़ता है और इस प्रकार राष्ट्र के आर्थिक कल्याण में भी वृद्धि होती है। इतना ही नहीं, मूल्य-तल के स्थायित्व तथा विनिमय-दर में आवश्यकतानुसार परिवर्तन की नीति अपनाने से विदेशी मौद्रिक नीति पर निर्भरता को भी समाप्त किया जा सकता है। अतः केन्द्रीय बैंक की साख नियंत्रण की नीति का प्रधान उद्देश्य मूल्य-तल को स्थायी बनाना होना चाहिए। 1931 में स्वर्ण-मान के पतन के बाद से ग्रेट-ब्रिटेन तथा अधिकांश देशों ने इसी प्रकार की मौद्रिक नीति का अनुकरण किया था जिसका प्रधान उद्देश्य मूल्य-तल का स्थायित्व था।

(3.) आय एवं रोजगार के उच्च स्तर पर आर्थिक-स्थायित्व :→

यदि केन्द्रीय बैंक मूल्य-तल तथा विनिमय-दर को स्थायी बनाने में सफल भी हो जाता है तो इससे

Page No.:
Date: / /

आर्थिक स्थायित्व नहीं स्थापित हो सकती। आर्थिक स्थायित्व के लिए उत्पाद एवं रोजगार के स्तर को स्थायी बनाना अनिवार्य है। अतः वर्तमान समय में प्रायः प्रत्येक देश की सरकार एवं मौद्रिक नीति का प्रधान उद्देश्य उत्पाद एवं रोजगार के उच्चतम स्तर पर आर्थिक स्थायित्व स्थापित करना है। अतः ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, स्वीडेन आदि देशों ने भी अपनी मौद्रिक एवं राजस्व नीति के प्रधान उद्देश्य के रूप में इसी उद्देश्य को अपनाया है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार राजस्व-नियंत्रण के उपरोक्त सारे उद्देश्य हैं। किन्तु इस सम्बन्ध में आधुनिक प्रवृत्ति एक ऐसी मौद्रिक एवं राजस्व-नीति के अनुकरण की है जिसमें विनिमय-दर के स्थायित्व एवं उच्चतम स्तर पर बेरोजगारी तथा वास्तविक उत्पाद को बनाये रखने के दोनों उद्देश्यों में उचित समन्वय स्थापित किया जा सके। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष की स्थापना ने इस प्रकार के समन्वय के कार्य को बहुत सुगम बना दिया है। मुद्रा कोष सम्बन्धी समझौते के अनुसार प्रत्येक सदस्य राष्ट्र को अपनी मुद्रा की विनिमय-दर को स्थायी बनाना अनिवार्य है। सदस्य-राष्ट्र मौलिक असंतुलन का समाधान मुद्रा-कोष से कर्ज लेकर या इसी

की अनुमति से अपनी मुद्रा का अवमूल्यन द्वारा भी कर सकते हैं। इस प्रकार मुद्रा कोष की स्थापना से साख एवं मौद्रिक नीति के इन दोनों उद्देश्यों में सामंजस्य स्थापित करने में अत्यधिक सुविधा हुई है।

क्रमशः